International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

गांधी जी की मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा

डॉ. सुन्दर लाल[1], डॉ. बी पी यादव[2]

[1]सह आचार्य (शिक्षा), [2]शैक्षणिक निदेशक
श्री गणेश कॉलेज ऑफ एजूकेशन चुडिना,
राजस्थान

Abstract:

शिक्षा मनुष्य की नैसर्गिक चेष्टा और उसकी विकासशील प्रकृति हैं । मनुष्य आदिकाल से सीखता आ रहा है । जो कुछ उसने सीखा है, उसे शिक्षा का रूप दिया हैं । शिक्षा मानव–समाज की संचित सीच हैं । वह उसे परम्परा और परिस्थिति के अनुसार ग्रहण करता हैं । शिक्षा तो एक प्रकार की चेतना हैं, जिसे मनुष्य स्वयं प्राप्त कर सकता हैं । यह एक गतिशील विषय हैं, इसका रूप स्थिर नहीं । इसकी धारा में एक सामाजिक प्रवाह होता हैं । प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री स्ट्रेचर का कथन हैं कि शिक्षा वह है जो विद्वान के कार्यो में अन्तर ला देती हैं । शिक्षित व्यक्ति का समाज में दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक आदर होता है । वह विद्वान और अनुभवी महापुरूषों के गम्भीर विचारों को शिक्षा के कारण ही सरलता से ग्रहण कर लेता हैं ।

INTRODUCTION

युनान के प्रसिद्ध विचारक प्लेटों के अनुसार किसी सरकार के अस्तित्व का नैतिक आधार शिक्षा ही है तथा जो सरकार लोगों की शिक्षा के कार्य भली प्रकार से नहीं करती, वह अपनी स्थिति के नैतिक आधार खो देती है । गांधी जी के कथनानुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे मानवता एवं देश का विकास हो तथा एकता स्थापित हो । जो राष्ट्र शिक्षा में जितना पिछड़ा रहता है, वह सभ्यता में भी उतना ही पीछे रहता है । विज्ञान के आविष्कारों का लाभ उसी को मिलता है जो सुशिक्षित हैं । शिक्षा का सर्वप्रथम आविर्भाव भारत में ही हुआ जिसका प्रमाण विश्व का पहला ग्रंथ ऋग्वेद है ।

ऋग्वेद के अनुसार– ''शिक्षा मनुष्य को आत्म विश्वासी और स्वार्थहीन बनाती हैं ।'' भारत देश जगद्गुरू माना जाता है और यही से शिक्षा का प्रचार–प्रसार क्रमशः विश्व के अन्य यहां की गुरुकुल शिक्षा पद्धति प्राचीनतम् है । अनेकों भारतीय विचारकों ने भी शिक्षा के बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं । शंकराचार्य के अनुसार शिक्षा स्वयं को जानना है । जाकिर हुसैन के विचार में ''शिक्षा सम्पूर्ण जीवन का कार्य है, यह जन्म से मृत्यु तक जारी रहता है । शिक्षा के बारे में पाश्चात्य् विचारकों ने भी अपने विचार प्रकट किये हैं । इनमें मुख्यतः प्लेटों के अनुसार–एक ही क्षण में सुख–दुःख अनुभव करने की योग्यता का नाम शिक्षा है । यह शिक्षा के शरीर तथा आत्मा में सारे सौन्दर्य तथा सम्पूर्णता को उसकी योग्यता के अनुसार विकसित करती हैं ।'' एक अन्य पश्चिमी विचारक फ्रौबेल के अनुसार–शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसकी मदद से बच्चा अपने आंतरिक गुणों को प्रकट करता हैं ।

शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय एवं पश्चिमी विचारकों के योगदान को ध्यान मे रखते हुए शिक्षा के विकास में गांधी जी की भूमिका उल्लेखनीय हैं । गांधी जी के शिक्षा दर्शन के मूल आधारों को समझने के लिए यह समझना आवश्यक है कि किस प्रकार गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए संघर्ष किया, किस प्रकार देश की आजादी की लड़ाई लड़ी क्योंकि गांधी जी ने बार–बार इस बात को स्पष्ट किया है कि शिक्षा उनके लिए देश की आजादी की लड़ाई का एक साधन है । अहिंसक क्रांति का एक साधन है । अतः गांधी जी के अनुसार शिक्षा से मेरा अभिप्राय है–बच्चे तथा मनुष्य के शरीर, मन, तथा आत्मा से सर्वोत्तम तत्वों को प्राप्त करना ।

प्रत्येक देश व समाज की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं । भारतवर्ष एक पुरातन देश है और यहां की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन होने के कारण यहां की सामाजिक व्यवस्था उसके सामाजिक आदर्श व मर्यादाएं अपनी विशेषताएं रखते हैं । किसी भी प्रकार की शासन प्रणाली में शिक्षा का अपना विशेष स्थान होता है । भारतीय समाज पर जो पश्चिमी लोकतन्त्र की प्रणाली अंग्रेजों द्वारा थोपी गई, उससे भारतीय समाज में अनेक बुराइयों का जन्म हुआ । महात्मा गांधी जी

ने इन बुराइयों को निकट से देखा और यह अनुभव किया कि आज समाज का जो पतन हो रहा है उसका मूल कारण शिक्षा के क्षेत्र में भेदभावपूर्ण नीति है । इस प्रकार गांधी जी ने विभिन्न समस्याओं और परिस्थितियों को समझकर शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने का प्रयास किया । गांधी जी ने अपने विचार भारतीय समाज को ध्यान में न रखकर बल्कि विश्व समाज की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को ध्यान में रखकर ही प्रकट करते थे ।

महात्मा गांधी जी द्वारा संचालित शिक्षा–योजना को जिस दृष्टिकोण से भी देखा जाए, वह सुदृढ़ एवं व्यापक परिलक्षित होती हैं । विभिन्न दृष्टि से उसके आधारों की वैज्ञानिकता का बहुआयामी अध्ययन निम्नानुसार प्रस्तुत हैं ।[1]

वैयाक्तिक आधार– यह योजना व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था करती है । गांधी जी की दृष्टि में व्यक्ति ईश्वर का प्रतिरुप हैं, अतः उसका उत्थान करना मानवीय एवं सामाजिक दृष्टि से अपेक्षित है । यह योजना बालक की रुचियों एवं प्रवृतियों के अनुकूल कार्य देकर उसकी शक्तियों का विकास करती हैं ।

सामाजिक आधार– शिक्षा के अन्तर्गत श्रम के आयोजन एवं उद्योग की प्रधानता द्वारा वर्ग–भेद की गहरी खाई को पाटने की व्यवस्था की गई है । शिक्षा–क्षेत्र में पूर्व प्रचलित वर्ग अनुकूल शिक्षा–सिद्धान्त की समाप्ति करके सामान्य एवं सार्वजनिक शिक्षा का आन्दोलन आरम्भ किया गया हैं । श्रम की व्यवस्था एवं उद्योगों का चयन समाज में फैली हुई बेकारी की समस्या का उन्मूलन कर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप से सामाजिक कुशलता का निर्माण करता हैं तथा जीवन में सादगी लाता है । शिक्षा पद्धति में प्रचालित जनतन्त्रात्मक शासन पद्धति से अनुशासनहीनता की समस्या भी उत्पन्न नहीं होती ।

आर्थिक आधार– इसमें गांधी जी ने स्वावलम्बन पर बल दिया है एवं व्यक्ति के लिए होती है, अतः इसका कुछ दायित्व जनता पर भी आ जाता हैं । स्वयं विद्यार्थी का भी कुछ न कुछ दायित्व वहन करना आवश्यक है । उसे शिक्षा ग्रहण करते समय स्वावलम्बी भी होना चाहिए । यह स्वावलग्बन शिक्षा के साथ श्रम को सम्बन्ध करके प्राप्त किया जा सकता हैं । विद्यार्थी को श्रम से दूर रखना या दूर रहना दोनों ही बातें अनुचित हैं । गांधी जी इस सत्य को मानते थे और इसलिए उन्होंने शिक्षा के साथ स्वावलम्बन को जोड़ना अपरिहार्य माना । गांधी का कथन था –''शिक्षा को स्वावलम्बी होना चाहिए, अर्थात शिक्षा से पूंजी के अतिरिक्त वह सब धन मिल जाना चाहिये जो उसे प्राप्त करने में व्यय किया गया हैं।''[2] छात्र अपने अध्ययन का व्यय स्वयं परिश्रम करके कमा सकें, मां–बाप पर आश्रित न रहें ।

मनोवैज्ञानिक आधार– मानव की विभिन्न प्रवृतियों के विकास काल का ध्यान रखते हुए उम्र के अनुसार शिक्षा व्यवस्था हेतु इसको चार भागों में विभाजित किया गया हैं । जिससे अन्य अनुभव भी प्राप्त हो सकें । बालक की रुचियों की पूर्ति हेतु पूर्व बुनियादी शिक्षा का आयोजन हैं । प्रौढ़ो की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रौढ़ शिक्षा का आयोजन हैं । वस्तुओं द्वारा शिक्षा, शिक्षा में खेल–योजना, क्रियाशीलता इत्यादि के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक महत्व अन्तर्निहित हैं । बालक को कल्पनाशील बनाकर भी उसके संवेगों को उचित विकास द्वारा व्यक्तित्व का गठन करती हैं ।

शैक्षणिक आधार– शिक्षा बालकों की समस्याएं सुलझाने का अवसर प्रदान करती है, उनकी कल्पनाशीलता का विकास करती है, विभिन्न अनुभवो को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती हैं, भाषा का विकास करती है और पारस्परिक विचार–विमर्श में भावों के आदान–प्रदान से बालक के शैक्षणिक स्तर को सुदृढ़ बनाती हैं ।

सांस्कृतिक आधार– अध्यापन में छात्र एवं शिक्षकों के सम्पर्क की घनिष्ठता ने बुनियादी योजना में वैदिककालीन संस्कृति का संयोजन कर दिया हैं । छात्रों एवं शिक्षकों के सम्बन्धों में घनिष्ठता एवं आत्मीयता के दिग्दर्शन होते हैं । साधारण बुनियादी विद्यालय गुरुकुल बन गए हैं । विभिन्न उद्योगों की प्रधानता ने संस्कृति एवं सभ्यता की परिधि को अधिक व्यापक बना दिया है ।

1सत्यमूर्ति, पूर्वोक्त, पृ. 51–53
2. देवी राम राय, गांधी जी और शिक्षा, तारा चन्द वर्मा (सं.), चिन्मय प्रकाशन, जयपुर 1969, पृ. 51

नैतिक आधार– गांधी जी ने नैतिक शिक्षा को शिक्षा का प्रमुख आधार बताया हैं । गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सत्य, अंहिसा, न्याय अच्छाई, अज्ञा पालन, बड़ों की सेवा एवं स्वाधीनता के सिद्धान्त मानव मात्र के चरित्र का विकास करने एवं उसे पूर्ण मानव बनाने के लिए उपयुक्त वातावरण का सृजन करते है । नियमितता, अनुशासन एवं कर्त्तव्यपर्यणता आदि मानवीय गुणों का जीवन में कितना महत्व हैं, उसे आज हम सब अनुभव कर रहें हैं । इसी सम्बन्ध में गांधी जी का कहना है कि ''नैतिक जीवन का और जो अर्थ हो, पर यदि वह सत्य पर आधारित नहीं हैं, तो वह नैतिक नहीं हो सकता ।''
सत्य की विस्तृत व्याख्या करते हुए स्वयं गांधी जी लिखते हैं कि ''सत्य वही है, जिसको हम मोक्ष कहते हैं, जो मोक्ष के लिए आग्रह का प्रदर्शन नहीं करता वह मनुष्य नहीं, पशुमात्र हैं ।''

शिक्षा में सरलता, लोक–कल्याण भावना एवं वर्गहीन शिक्षा का आयोजन नैतिक स्तर का उत्थान कर आध्यात्मिक विकास की क्षमता प्रदान करता हैं । गांधी जी के शब्दों में ही ''जीवन के द्वारा जीवन की शिक्षा''[3] सही अर्था में सत्य पर आधारित मुक्ति का मार्ग हैं । व्यक्ति अपना जीवन समृद्ध बनाने व दूसरों के जीवन के बारे में अपना दायित्व समझे ।

गांधी जी के शिक्षा के मूल आधारों की सूक्ष्म एवं व्यापक समीक्षा कर लेने के पश्चात् गांधी जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के मुख्यतः चार तत्वों का भी अपना विशेष स्थान हैं ।[4] गांधी जी ने कहा कि आज हर स्थान पर सत्ता तत्व विभिन्न रुपों में फैला हुआ हैं । जैसे परिवार में बड़ों की सत्ता, व पुरुषों द्वारा स्त्रितयों पर सत्ता तथा एक राष्ट्र की दूसरे राष्ट्र पर सत्ता, परम्परा की सत्ता हर क्षेत्र में दिखाई प्रतीत होती हैं । सत्ता का स्थानांतरण करने के लिए बहुत अधिक प्रयोग हुए हैं । लेकिन फिर भी उपासना केवल सत्ता की ही चल रही हैं । पहले धर्म की सत्ता थी, इसके बाद राजा की सत्ता स्थापित हुई । बाद में राजा की सत्ता समाप्त करके जनता की सत्ता आई और कारखानेदारों की सत्ता स्थापित हुई । जमीदारों की सत्ता तोड़कर कारखानेदारों की सत्ता की ही थी । संसार को नई दिशा देने के लिए शिक्षा को शासन का बहिष्कार करना चाहिए । शिक्षा का आदर्श, शिक्षा की रचना और शिक्षा संस्था में चाहे जितनी आग्रहपूर्वक व्यवस्था रहे, लेकिन उसमें शासन के लिए अवकाश नहीं रहना चाहिए । गांधी जी की राय में सत्य की खोज और सत्य का प्रचार करके उसे–आत्मसात् करना चाहिए तथा शासन से यह बात कभी भी नही होगी ।

गांधी जी ने मूल्यपरक शिक्षा में दूसरा तत्व श्रद्धा एवं नम्रता बताया है । उनके अनुसार दूसरे के सामने सिर झुकाना नम्रता नहीं हैं । जो भी शास्त्र या बड़े लोग कहते हैं उसे बिना विचार करे स्वीकारना भी नम्रता नहीं हैं । गांधी जी के शास्त्र में श्रद्धा का अर्थ है खुला अंतःकरण । बिना सोचे किसी भी विचार के बारे में अनुकूल या प्रतिकूल राय कायम करने और अनुभव की कसौटी पर कस कर देखने को ही श्रद्धा कहते हैं । इस श्रद्धा की पृष्ठभूमि में रहने वाली नम्रता का इतना ही अर्थ हैं कि हम सर्वज्ञ नहीं हैं, यह भावना हमारे अन्दर रहे । जीवन में ऐसी कई अज्ञात बातें रहती हैं, जो हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं । शिक्षा के तत्वों में गांधी जी ने हिम्मत को भी महत्वपूर्ण बताया हैं । उनके विचार में शिक्षा अज्ञान के क्षेत्र की एक यात्रा है । जिस प्रकार किसी अज्ञात समुद्र में नौका डालकर उसे पार करना कठिन है, उसी प्रकार शिक्षा को भी प्राप्त करना उतना ही कठिन कार्य हैं । इसमें शिक्षार्थी को अपना सब कुछ न्यौछावर करना पड़ सकता हैं । अपना सारा जीवन शिक्षा में ही बिताना पड़ सकता हैं । अपना जीवन सर्वस्व जोखिम में डालने की प्रवृति को आस्तिकता कहा जा सकता है । इसलिए बिना हिम्मत के शिक्षा ग्रहण करना बहुत मुश्किल हैं ।
गांधी जी ने कहा है कि शिक्षा के तत्वों में अपनी दृष्टि का अपना विशेष स्थान हैं । यत्किंचित भी स्वार्थ साधन न करते हुए सगब का हित हो और हमेशा के लिए हो, इस सद्भावना को अमी दृष्टि कहते हैं । इस जीवन में हम साथ क्या ले जाऐंगे कि जिसके लिए हम पक्षापात करें । कई बार व्यक्ति यह समझता है कि शिक्षा को अज्ञानी होकर या फिर आलसी बनकर प्राप्त किया जा सकता है । तो यह बिल्कुल निरर्थक बात होगी । सही अर्थो में ऐसा व्यक्ति ही शिक्षा प्राप्त कर सकता है जो अज्ञा, रुढ़ि व आलस को त्याग देगा ।

परिणामतः इन चारों तत्वों को गांधी जी ने शिक्षा के लिए अति आवश्यक माना हैं । इन तत्वों से युक्त शिक्षा ही मानव की आत्मा को शुद्ध एवं उसका सर्वागीण विकास करती हैं ।

3. जगदीश सुदामा, गांधी जी और नई शिक्षा पद्धति, ताराचन्द वर्मा (सं.) चिन्मय प्रकाशन, जयपुर, 1969, पृ०. 23
4. पुण्डलीकजी कातगड़े, गांधी दर्शन, शोभालाल गुप्त (स०), नवजीव संघ, नई दिल्ली, 1971 पृ. 138–139

परीक्षण और खोज में गांधी जी की अट्ट आस्था थी इसीलिए शिक्षा के क्षेत्र में भी वे अनेक प्रयोग करते रहे और अन्तिम निष्कर्ष के रुप में उन्होंने भारतीय परिवेश के लिए बुनियादी शिक्षा अर्थात् बेसिक अवधारणा पर बल दिया । उन्हीं के आलोक में बेसिक शिक्षा के प्रमुख उदेष्य निम्न प्रकार से हैं ।

यदि हम महात्मा गांधी जी के शब्दों में शिक्षा के अर्थ को पाने की चेष्टा करें, तो यह कहना होगा कि शिक्षा 'जीवन का अमल'है । गांधी जी के अनुसार'' शिक्षा गर्भावस्था से लेकर मृत्यू तक चलने की प्रक्रिया हैं ।''[5] शिक्षा मानव–विकास के लिए अनिवार्य है । शिक्षित व्यक्ति का समाज में आदर होता है । शिक्षित व्यक्ति अपने आस–पास के वातावरण को ध्यान में रखकर ही कोई कार्य करता हैं । गांधी जी ने शिक्षा में विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों को महत्व दिया हैं । गांधी जी ने लिखा हैं कि शिक्षा से मेरा यह मतलब है कि बालक और मनुष्यों में जो सर्वश्रेष्ठ हैं, उसका सर्वत्तोमुखी विकास किया जाए–शारीरिक, मानसिक और अत्मिक सभी दृष्टियों से ।[6]

उन्ही के विचारों में शिक्षा का ध्येय 'सा विद्या या विमुक्तये'[7] हैं । उनके अनुसार शिक्षा या विद्या वही हैं, जो मुक्त करती हैं । गांधी जी ने इसके दो अर्थ बताएं हैं । उनके अनुसार मुक्ति का अर्थ–वर्तमान जीवन में भी सब प्रकार की क्षमता से स्वतन्त्रता व दासता आर्थिक, राजनैतिक और मानसिक हो सकती है । जब एक मनुष्य इनमें से किसी भी बेड़ी में बंधा हुआ है, तब तक उसकी प्रगति असम्भव है । अतः शिक्षा का उदेदश्य हैं, 'मनुष्य को सभी प्रकार की दासता से मुक्त करना' ।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची:

1. (1938) *हिन्द स्वराज और इण्डिन होम रूल,* नवजीवन पब्लिसिंग हाऊस, अहमदाबाद,
2. (1954) *कान्सट्रक्विटाव प्रोग्राम,* नवजीवन पब्लिसिंग हाऊस, अहमदाबाद,
3. (1954) *टूवार्डस न्यू ऐजूकेशन,* नवजीवन पब्लिसिंग हाऊस, अहमदाबाद,
4. (1954) *मीडियम आफ इन्स्ट्रक्शन,* भरतन कुमारप्पा, (सं.), नवजीवन पब्लिसिंग हाऊस, अहमदाबाद,
5. (1957) *आत्मा कथा,* नवजीवन प्रकाशन मन्दिर ।
6. (1958) *हिन्द स्वराज,* नवजीवन प्रकाशन मन्दिर ।
7. (1958) *मैसेज टू स्टूडेन्टस,* नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद ।
8. (1958) *ईविल रोउट बाई दि इग्लिंश मीडियम,* नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद ।
9. (1960) *आश्रमवासियों से,* सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।
10. (1972) *ओ माई कैन्टरीमैन,* नवजीवन ट्रस्ट, अहमबाद ।
11. (1999) गांधी जी, (अनु. काशीनाथ त्रिवेदी), *संक्षिप्त आत्मकथा* नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद

5. प्रेमनाथ सहाय, बुनियादी शिक्षा के अर्थ एवं सिद्धांत, प्रोग्रेसिव टीचर्स एण्ड आथर्स, नई दिन्ली, पृ.2
6. कमला द्विवेदी, गांधी जी का शिक्षा दर्शन, श्री पब्लिशिग हाऊस, नई दिल्ली, 1986, पृ. 155
7. धुरजती मुखर्जी, दि टोवरिग स्पिरिट, चेतना पब्लिकेशन, चे पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. 87